



शिक्षा की अनमोल अन्तः प्रेरणा

प्रो. बी. एल. जैन

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

मन कुलषित भावों से भरा पड़ा है, ये भाव बाहर से परिलक्षित नहीं होते लेकिन व्यवहार व क्रियाओं में अवलोकित हो रहे हैं। मन में तामसिक व राजसिक भावों की मात्रा बढ़ी है। मन में आवेग, आवेश, घृणा, नफरत, ईर्ष्या, कलह, संघर्ष, असत्य, बेईमानी का कचरा भरा पड़ा है। ज्ञान की अनमोल अन्तः प्रेरणा से इन्हें दूर किया जा सकता है। सकारात्मक सोच, व्यवहार की शालीनता, मधुर वाणी, भावजागृति भाव की शुद्धता, निर्मलता व पावनता बनावें, आत्मबोध की शिक्षा, स्वयं पर चिन्तन व मनन करें, स्वाध्याय करें, राग-द्वेष के भाव से ऊपर उठें, आध्यात्मिकता का विकास करें, शुद्धता का बोध हो, मौलिकता की पहचान करावें जिससे शिक्षा की सार्थकता इन अन्तः प्रेरणा से सार्थक हो सकेगी।

मुख्य शब्द - शुद्धि, ज्ञान, व्यवहार, भाव, आत्मबोध, स्वयं, अन्तरात्मा, शुद्धता, मौलिकता

प्रस्तावना

अन्तः शुद्धि से जीवन शुद्धि

आज शिक्षार्थी के अन्दर कुंठा, अवसाद, चिन्ता, भगनाशा, तनाव, व्याकुलता, व्यग्रता की मात्रा अधिक है। बाहर से उसके अन्दर ये भाव परिलक्षित नहीं होते लेकिन अन्दर कुलषित भावों से भरा हुआ है। विद्यार्थी अन्तःशुद्धि करें, जिससे जीवन शुद्धि हो सके। जीवन मूल्यवान है, जिस शिक्षा से शुद्धता, विशुद्धता, पावनता, पवित्रता, निर्मलता के भाव आभा में अवतरित होने चाहिए, वे नहीं हो पा रहे हैं। अधिकांश विद्यार्थियों का मन कामना, लालसा, वासना, तृष्णा में विचरण करता रहता है। मन में एकाग्रता, तन्मयता, समर्पण, श्रद्धा, शालीनता, सौहार्द्र के भाव अल्प मात्रा में होते जा रहे हैं। जब तक अन्दर सात्विक भाव नहीं होगा, तामसिक व राजसिक भावों का परिमार्जन, परिष्कृत व परिशोधन नहीं

कर सकेंगे। कैसे अन्तःशुद्धि से जीवन शुद्धि आ पायेगी ? किताबी ज्ञान से ज्यादा शिक्षार्थी में अच्छे भाव, अच्छे विचार, अच्छे संस्कार होने चाहिए। शिक्षार्थी में आवेग, आवेश, अमनस्यक, घृणा, नफरत, बेईमानी, असत्य, चोरी, लालच आदि का भाव भरा हुआ कच्चा साफ करना चाहिए। हम बाहर की सफाई तो कर देते हैं, लेकिन अन्दर की सफाई नहीं कर पा रहे हैं। बाहर की सफाई से ज्यादा अन्दर की सफाई होना आवश्यक है।

ज्ञान नहीं जलता

आग से शरीर जल जाता है, लेकिन ज्ञान कभी भी नहीं जलता है। ज्ञान व चरित्र में चरित्र शरीर के साथ समाप्त हो जाता है लेकिन ज्ञान आत्मा के साथ रहता है ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता है। ज्ञान व्यक्ति को हमेशा काम आता है, वह हर पथ पर रास्ता दिखाता है। ज्ञान जड़ है, पत्ते



चरित्र हैं। ज्ञान को अर्थात् जड़ को सींचेंगे तो पत्ते हरे होंगे, पत्ते सींचेंगे तो वृक्ष सूख जायेगा। अतः जड़ को सींचे, ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव है, चरित्र केवल आरोपण है।

ज्ञान से बड़ा व्यवहार

व्यक्ति के पास ज्ञान है, लेकिन व्यवहार ठीक नहीं है। उसे कौन पसंद करेगा ? ज्ञान के साथ व्यक्ति का व्यवहार अच्छा है तो उसका समाज में सम्मान होगा। रावण के पास ज्ञान था लेकिन व्यवहार ठीक नहीं था। इसलिए रावण को सम्मान नहीं मिला। दुनिया में ज्ञान को व्यवहार के रूप में देखा जाता है। बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके पास ज्ञान नहीं है लेकिन व्यवहार शालीन, विनम्र, मान- सम्मान वाला है, वे सभी के आदरस्वरूप बने। मान-सम्मान देने से व्यवहार में श्रेष्ठता आती है। सोच, विचार, सकारात्मक होगा तो व्यवहार भी श्रेष्ठ होगा। व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तित्व व चरित्र का परिचायक होता है। व्यवहार में शालीनता, मधुरता, नम्रता, विनम्रता, सौहार्द जितना अधिक होगा। वह व्यक्ति उतना महान होगा। उठना, बैठना, चलना, बोलना आदि सभी व्यक्ति के व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं।

भाव जागृति

भावों में ही चेतना बसी है, भावों में ही राग पैदा होता है, भावों में ही वैराग्य व भावों में ही वीतराग पैदा होता है। भावों में ही राग तथा वासना का वास तैयार होता है, भावों में ही द्वेष बनता है। भावों में ही भूत सवार होता है। जिस विचार का भूत सवार हो जाता है, वही ही अन्तर्मन में ज्वार भाटा की तरह उठने लगता है। भावों को जागृत रखने पर मन भी जागृत होगा। भाव से मनुष्य रागी, वैरागी व वीतरागी बन

जाता है। भाव से हम किसी से जुड़ने का काम करेंगे तो राग होगा। भाव से किसी से तोड़ने का सम्बन्ध बनाये तो वैराग्य होगा। भावों में जुड़ने व तोड़ने दोनों से ऊपर उठेंगे तो वीतरागी होंगे। हमारे भावों को निर्मल, पवित्र व शुद्ध रखेंगे तो मन में विकार उपस्थित नहीं होंगे। भाव में वासना ले आर्येंगे तो कामी बन जायेंगे। भाव में वासना को हटा देंगे तो वैरागी बन जायेंगे। भाव में दोनों से हटकर ऊपर उठने के विचार रखेंगे तो वीतरागी बन जायेंगे। महावीर की भाषा में राग-अपने आपको दूसरों से जोड़ना। विराग-दूसरों से अपने आपको तोड़ना। वीतराग- अपने आपको दूसरों से ऊपर उठाना। बुद्ध ने इसे ही वृत्ति निवृत्ति परावृत्ति का नाम दिया है।

आत्म बोध की शिक्षा

शिक्षा में आकर्षण अधिक बढ़ रहा है। सुन्दर भवन, सुन्दर आडिटोरियम, सुन्दर कक्षा-कक्ष, सुसज्जित शिक्षा के संसाधन जो लोगों को बाहर से आकर्षित करने वाले हैं, लेकिन शिक्षार्थी की अन्तरात्मा का वास्तविक बोध करने वाले शिक्षक नहीं हैं। सच्चे व भावों से सुन्दर शिक्षक का अभाव है जो मन से, श्रद्धा से शिक्षार्थी को शिक्षा दे सके। शिक्षक में भी आत्मबोध कैसे आयेगा ? दिन भर शिक्षक से अतिरिक्त कर्मचारियों के काम कराये जाते हैं। वह कैसे अपने विद्यार्थी का आत्मबोध करेगा ? जब तक विद्यार्थी का आत्म बोध नहीं होगा, सही शिक्षा दे पाना संभव नहीं है। हम अच्छे शिक्षक, ज्ञानी शिक्षक, सच्चे शिक्षक, गुणवान शिक्षक को देखकर संस्थान में प्रवेश ले रहे हैं या आकर्षित, सुसज्जित भवन को देखकर शिक्षार्थी का प्रवेश करा रहे हैं। यदि शिक्षक के कारण प्रवेश ले रहे हैं तो उस विद्यार्थी की शिक्षा सार्थक होगी।



स्वयं के जीवन पर चिन्तन व मनन करें शिक्षा में शिक्षक व शिक्षार्थी अपने जीवन पर चिन्तन व मनन करें। मनन के समय यह देखें कि मेरे अन्दर का वैभव खण्डहर, जर्जर व विच्छिन्न तो नहीं हो रहा है। असत्य, हिंसा, बुराई, आलोचना से उस सुन्दर वैभव को भर रखा है, विचारों की गंदगी से परिपूर्ण किया हुआ है तो विचारों की गंदगी से आत्मा की पवित्रता, निर्मलता व शुचिता कम हो जाती है। हमारी अन्तरात्मा की शक्ति उतना काम नहीं करती जितना करनी चाहिए। वह परमशक्ति/ईश्वरीयशक्ति तब कार्य करती है, जब राग द्वेष के भाव सम्मिलित न हो। उस अन्तरात्मा में शुद्ध, पवित्र व निर्मल चिन्तन की धारा प्रवाहित होती रहे। हम दूसरों पर घटित हुए सत्य को स्वयं पर घटित हुआ देखें।

अन्तरात्मा को जाग्रत करना

अन्तरात्मा को सदैव प्रसन्न, खुश व आनन्द में रखना चाहिए। किसी की अन्तरात्मा को रूलाना अपने आप को रूलाना है। हमें निर्मल, पवित्र, सात्विक तथा पावन भरे कार्य करते रहना चाहिए। स्वाध्याय से अन्तरात्मा की जागृति वृद्धि की ओर, प्रकाश की ओर गतिमान होती है। अन्तरात्मा में राग-द्वेष के भाव कम से कम लाने का प्रयास करना चाहिए। तटस्थ भाव से कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। आनन्द देने वाले, मन को प्रसन्न रखने वाले, मन में उजाला भरने वाले कार्य करने चाहिए। जीवन में सदैव ये घटनाएँ जीवन में रूपान्तरण का काम करेगी।

शुद्धता का बोध

पानी की शुद्धता पानी से है और दूध की शुद्धता दूध से है। पानी में दूध व दूध में पानी मिलाने पर वे अपनी शुद्धता को खो देते हैं। दूध में चाहे

गंगा जल का ही पानी मिलाया हो दूध भी अपनी शुद्धता को खो देता है। किसी भी वस्तु में दूसरी वस्तु का मिश्रण करने पर वह अपनी शुद्धता को खो देती है। शिक्षार्थी जीवन में आत्म तत्व व शरीर को एक समझना गलत है। शरीर व आत्मा दोनों अपने आप में अलग हैं।

मौलिकता की पहचान कराएं

शिक्षक स्वयं की मौलिकता को पहचाने व छा की मौलिकता की पहचान कराएं। उसकी मौलिकता का परिचय शिक्षार्थी को अवश्य कराएं। शिक्षार्थी को स्वयं पता नहीं होता कि उसमें किस कार्य को करने की मौलिकता विद्यमान है। जैसे दूध में दही, छाछ, पनीर, मक्खन छिपा होता है। जो उसे निकालना जानता है, वह उसे निकाल लेता है। बहुत से व्यक्ति दूध से पनीर बनाना नहीं जानते लेकिन दही से छाछ तो बनाना जानते हैं। उसे पनीर निकालना व मक्खन निकालना नहीं आया तो उसकी मौलिकता का विकास हमने नहीं किया। जीवन में हर व्यक्ति में कोई न कोई मौलिकता होती है। जैसे ट्रेन में गिटार बजाने वाले, गीत गाने वाले व्यक्ति में मौलिकता होती है, लेकिन उसका मोल कोई नहीं जानता है। यदि वे फिल्मी दुनिया में अपनी मौलिकता को प्रकट करें तो वहाँ कार्य करने वालों से अच्छा काम कर सकते हैं।

पुस्तक दुःख की दवा

आज शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षाविद और शिक्षित का जीवन अधिकांश दुःख क्षणों में व्यतीत होता है। वे किसी न किसी विषय पर चिंता के साथ नकारात्मक भावों के प्रवाह में डूबे रहते हैं। गलत, अनर्गल व ओछे विचारों का प्रवाह अधिक मन के अन्दर आते हैं। इस प्रकार के चिंता, भय, अवसाद, तनाव, असफलता के दुःख से छुटकारा



पाने के लिए हम अच्छी पुस्तक, अच्छा साहित्य, अच्छे ग्रन्थ का स्वाध्याय करें। जिससे मन के विचार उस साहित्य या पुस्तक पर प्रवाहित हो। श्रेष्ठ साहित्य का स्वाध्याय करने वाले का मन सदैव प्रसन्नचित, खुशी व आनन्द में व्यतीत होता है। अपने साथ चाहने वाला व्यवहार दूसरों के साथ करें। जैसा व्यवहार तुम अपने लिए चाहते हो वैसा व्यवहार तुम दूसरों के साथ करो। जैसे-दूसरे पर तुम थकते हो तो अपने ऊपर थक डलवाने की समर्थता रखो, स्वयं को गर्मी जैसे लगती है, वैसे ही दूसरे को भी गर्मी लगती है। जैसे स्वयं कार्य करने पर थक जाते हैं, वैसे मजदूर भी कार्य करने से थक जाता है। जैसे हम अनुशासन में रह सकते हैं, वैसे ही दूसरे से अनुशासन में रहने की अपेक्षा की जा सकती है। हम चाहते हैं कि हमारे साथ दुर्व्यवहार न हो तो हम दूसरों के साथ दुर्व्यवहार न करें। जैसा बीज बोया जायेगा, वैसा ही तो फल निकलेगा। यदि हम अच्छी फसल चाहते हैं तो बीज भी अच्छा बोए। आम का बीज बोने पर नीम के पेड़ उत्पन्न नहीं होते। यदि हम अपने साथ प्रेम व सौहार्द्र का व्यवहार चाहते हैं तो दूसरों के साथ मधुरता व शालीनता का व्यवहार करें। किसी से गाली लेने का व्यवहार नहीं चाहते तो किसी को गाली मत दो। यदि क्रोध या गुस्से में नालायक आदि शब्द निकल जाय तो स्वयं को तुरन्त नियंत्रण करें। बाढ़ के पानी की तरह गलत शब्दों को निकालते नहीं जाएं। जैन दर्शन में गाली न बकना समिति और मुख पर आते ही रोक देना गुप्ति है।

उपसंहार

जीवन समस्या व संघर्ष को पार पा लेना है। जीवन है तो समस्याएँ हैं, असफलता है, परेशानी है, दिक्कत है, मुसीबत है। जीवन नहीं है तो

कुछ भी नहीं है। जीवन का मूल्य समझना होगा। कोई वस्तु अपना मूल्य नहीं बताती है, मूल्य हम निर्धारित करते हैं। हीरा, सोना, चाँदी, लोहा, पीतल अपना मूल्य नहीं बोलते। ये मूल्य तो हम निर्धारित करते हैं। जीवन में अपना मूल्य है, उसे हम पहचान नहीं पाते हैं। किसी को एक आँख की जरूरत पड़ी, किसी को एक पैर की जरूरत पड़ी। हमें उसे बेचना पड़े तो हजार/लाख रुपये मिल सकते हैं, लेकिन हम उस मूल्य को पहचान नहीं पाते। पृथ्वी की हर वस्तु की अपने स्थान, समय, परिस्थितियों में महत्त्व है। शिक्षा व ज्ञान में बहुमूल्य अन्तः प्रेरणा है। उन अन्तः प्रेरणा से शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा संस्थान के सदस्यों में परिवर्तन लाने का यह प्रयास है। अपनी मौलिकता से, सृजनात्मकता से तथा रचनात्मकता से समाज, राष्ट्र व देश को बदल सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- 1 साध्वी विमलप्रजा, साध्वी विश्रुतविभासितम्बर (2005). महाप्रज्ञ ने कहा-7, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्ली।
- 2 महाप्रज्ञ, आचार्य (अगस्त 2005). अहिंसा के अछूते पहलू, जैन विश्वभारती लाडनूँ
- 3 महाप्रज्ञ, आचार्य (2006). कैसे सोचें ? जैन विश्वभारती लाडनूँ
- 4 महाप्रज्ञ, आचार्य (2006). जीवन विज्ञान (शिक्षा का नया आयाम), जैन विश्वभारती लाडनूँ
- 5 साध्वी विश्रुतविभासाध्वी विमलप्रजा, (अगस्त 2007). महाप्रज्ञ ने कहा-4, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्ली।
- 6 आचार्य महाप्रज्ञ (2007). परिवार के साथ कैसे रहें, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा 3 पोर्चुगीज स्ट्रीट कलकत्ता।